केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय एस.एस.बी. श्रीनगर

वागीशा

राजभाषा ई-पत्रिका

सत्र : 2023-24

हिन्दी

संपादकीय दल

संरक्षक – श्रीमती कृति सक्सेना (प्राचार्या)

सुश्री प्रीति कुमारी - स्नातकोत्तर (हिन्दी)

श्री राहुल - प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)

श्री मिथलेश निषाद – कला शिक्षक

सुश्री   श्रुति – कम्प्यूटर प्रशिक्षक (संविदा)

<u>उपायुक्त सन्देश</u>

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष की अनुभूति हो रही हैं कि केन्द्रीय विद्यालय एसएसबी श्रीनगर द्वारा विद्यालय की राजभाषा ई-पत्रिका "वागीशा" सत्र 2023-24 का प्रकाशन किया जा रहा है| विद्यालय राजभाषा पत्रिका साहित्यिक प्रतिभा और रचनात्मक कौशल को बढाने में एक उत्प्रेरक का कार्य करती है| इसके अलावा, यह घटनाक्रम और विद्यालय की उपलब्धियों के साथ-साथ विद्यार्थियों द्वारा रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए भी एक उपयुक्त मंच है|

मुझे यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता हो रही हैं कि इसमे शत-प्रतिशत राजभाषा हिंदी के विचार समावेशित किए गए हैं|

यह खुशी की बात हैं कि केंद्रीय विद्यालय एसएसबी श्रीनगर गुणवता की शिक्षा प्रदान कर अपने उद्देश्यों और उनकी उपलब्धियों की पूर्ति की दिशा में बहुत ही सार्थक कदम उठा रहा हैं|

मैं विद्यालय के प्राचार्या, शिक्षको, छात्रों, अभिभावकों एंव संपादकीय टीम को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई देती हूँ तथा विद्यालय के उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ|

उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून

सहायक आयुक्त संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष की अनुभूति हो रही है कि केन्द्रीय विद्यालय एसएसबी,श्रीनगर द्वारा विद्यालय की राजभाषा ई-पत्रिका "वागीशा" सत्र 2023-24 का प्रकाशन किया जा रहा है । मैं विद्यालय पत्रिका हेतु अपने विचारों को कलमबद्ध करने हेतु अभिभूत हूँ । विद्यालय पत्रिका विद्यालय के राजभाषा हिन्दी के प्रति अनवरत प्रयासों का परिणाम है ।पत्रिका के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति, कविता,लेख आदि से लेखन अभिरुचि का विकास होता है । पत्रिका विद्यालय का दर्पण होती है, जिसमें उसकी उपलब्धियों,कार्यकलापों एवं विविध गतिविधियों का समावेश होता है ।

विद्यालय पत्रिका का प्रत्येक अंक समाहित उद्देश्यों की पूर्ति करने में सफ़ल हो, ऐसी मैं आशा करता हूँ । मैं कामना करता हूँ कि विद्यालय निरंतर अपने लक्ष्यों की प्राप्ति कर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहें ।

मैं विद्यालय की प्राचार्या,शिक्षकों,छात्रों ,अभिभावकों एवं संपादकीय टीम को विद्यालय की राजभाषा ई-पत्रिका के सफ़ल प्रकाशन हेतु बधाई देता हूँ तथा विद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।

(सुरजीत सिंह)
सहायक आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
देहरादून संभाग

अध्यक्ष सन्देश

सन्देश

हिन्दी न केवल एक भाषा है, अपितु यह भारत को एक सूत्र में बांधने का कार्य भी करती हैं। मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि केन्द्रीय विद्यालय एसएसबी श्रीनगर अपनी विद्यालय की राजभाषा ई-पत्रिका 'वागीशा' का प्रकाशन करने जा रहा हैं। राजभाषा पत्रिका विद्यालय की वर्ष भर की हिंदी भाषा से संबंधित गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की झांकी को प्रस्तुत करती हैं। पत्रिका विद्यालय द्वारा हिन्दी भाषा में किए जाने वाले कार्यों तथा भाषा के प्रचार प्रसार को प्रभावी मंच प्रदान करती हैं। विद्यालय अपने शिक्षा के प्रति निरंतर प्रयासों से ज्ञान की ज्योति को भारत वर्ष में प्रज्वलित करने का सार्थक प्रयास कर रहा हैं।

मैं विद्यालय के विद्या रूपी वातावरण में अपना भविष्य निर्माण कर रहे सभी विद्यार्थियों उनके अभिभावकों, विद्यालय की प्राचार्या, तथा समस्त शिक्षकों को सुनहरे भविष्य की शुभकामनाएं देता हैं। मैं साथ ही पत्रिका के लेखन एवं सम्पादन से जुड़े सभी शिक्षकों को बधाई देता हूं तथा कामना करता हूँ कि विद्यालय निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर रहें तथा देश का गौरव बढ़ाए।

धन्यवाद

सुभाष चंद नेगी

अध्यक्ष

विद्यालय प्रबंधन समिति

के.वि. एसएसबी श्रीनगर

प्राचार्य की कलम से........

मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है केन्द्रीय विद्यालय एसएसबी श्रीनगर राजभाषा पत्रिका “वागीशा” सत्र 2023-24 का प्रकाशन कर रहा है । जिसमें हमारे विद्यालय की समस्त हिन्दी भाषी गतिविधियों एवं क्रियाकलापों आदि को प्रस्तुत किया गया है ।

राजभाषा पत्रिका ‘वागीशा’ विद्यालय से संबंधित हिंदी भाषा में अपनी सृजनात्मक लेखन क्षमता तथा अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रेरित करने का एक सशक्त एवं प्रभावी माध्यम है ।

पत्रिका में अपने विचारों तथा कल्पना को कहानी कविता लेख आदि के माध्यम से व्यक्त करते हैं । जिससे लेखन अभिव्यक्ति के साथ-साथ स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास होता है । यह मेरा पूर्ण विश्वास है विद्यालय का यह प्रयास आपको अवश्य प्रभावित करेगा ।

मैं केन्द्रीय विद्यालय संगठन देहरादून संभाग के माननीय उपायुक्त एवं सहायक आयुक्त के प्रति उनके सहयोग एवं उत्साहवर्धन के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ ।मैं विद्यालय के अध्यापकों तथा संपादकीय मंडल के सभी सदस्यों को उनके सराहनीय प्रयास के लिए बधाई तथा धन्यवाद देती हूँ । यह पत्रिका विद्यालय के राजभाषा क्रियाकलापों का साक्षी होगा ।

कृति सक्सेना
प्राचार्या

संपादक

हिंदी भाषा विश्व की प्राचीन एवं सरल भाषाओँ में उच्च स्थान रखती है । हिंदी भाषा हमारी संस्कृति की पहचान है । हिन्दी भाषा ने सदैव राष्ट्र को गौरवान्वित किया है । हमारा सुदृढ़ साहित्य विशाल है, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश की एक अलग पहचान बनाता है । पूरे विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रचार – प्रसार करने का श्रेय हिन्दी भाषा को जाता है । हिन्दी जनमानस की भाषा है । यह जन-आंदोलनों की भाषा रही है । हिन्दी भाषा ने सभी धर्मों के लोगो को जोड़े रखा है ।हिन्दी भाषा मात्र एक भाषा नहीं वरन राष्ट्र की संस्कृति तथा संस्कारों की परिचायक भी है ।

एक स्वतंत्र देश की खुद की एक भाषा होती है, जो उस देश का मान-सम्मान और गौरव होती है। भाषा और संस्कृति ही उस देश की असली पहचान होती है। भाषा ही एक ऐसा जरिया है, जिसकी मदद से हम अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। विश्व में कई सारी भाषाएँ बोली जाती है, जिसमें हिंदी भाषा का विशेष महत्व है। यह भाषा भारत में सबसे अधिक बोली जाती है और विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में दूसरा स्थान है।

हिंदी भाषा का प्रभाव और महत्व इतना प्रबल रहा है कि दुनिया भर के विभिन्न देशों में लोगों ने इसका अध्ययन करना शुरू कर दिया है। जैसे अंग्रेजी दुनिया को बांधती है, वैसे ही हिंदी एक ऐसा सेतु है जो दुनिया भर के लोगों को जोड़ता है ।एक ऐसी भाषा जिसमें हम सपने देखते हैं क्योंकि यह हमारी संवेदनाओं को शब्द देती है और हमारी अभिव्यक्ति को जीवंत करती है। दुनिया भर में कई ऐसे लोग हैं, जो विदेशों में भाषा और साहित्य के माध्यम से भारत की संस्कृति को संरक्षित और बढ़ावा देने के लिए समर्पित रूप से काम कर रहे हैं। वे युवा पीढ़ी को इसके साहित्य और विश्वासों में निहित भारत की संस्कृति को सीखने में मदद कर रहे हैं। अलग-अलग देशों के ऐसे हैं। लोग जो भारत से नहीं हैं या कभी भारत नहीं आए हैं, हिंदी सीखने के लिए भरपूर प्रयास कर रहे हैं ।

आज जिस तरह से हिंदी को पढ़ाया जाता है, उसने भी इसकी इसकी लोकप्रियता में योगदान दिया है। हिंदी भाषा को न केवल भारत में बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अत्यधिक महत्व मिल रहा है। हिन्दी भाषा के प्रति हमारा कर्तव्य है कि हम भाषा के विस्तार के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहें तथा इसका सम्मान करें सभी को यह समझना होगा भाषा के गौरव में ही राष्ट्र का गौरव है ।

"हिंदी : अपनों की भाषा, सपनों की भाषा: पढ़ें, बोलें, सीखें । गर्व करें।"

प्रीति कुमारी
स्नातकोत्तर (हिन्दी)

जीत की जिद

मार कर सौ तीर बैठा क्यूँ हताशा के भंवर में ,

राह मंजिल की मिलेगी, इस निराशा के नगर में |

है अभी युवा फिर, क्यूँ इतना थक के चूर है ,

उपलब्धियों की डगर, क्या कोई तुझसे दूर है |

क्या मिली उपलब्धियाँ सबको घरों में बैठकर ,

काम करने से ही तो, हर आदमी मशहूर है |

कर्म की ताकत बिना, कोई भी कुछ पाता नहीं ,

हाथ की गतिहीनता बिन, कोई कुछ खाता नहीं |

कर भरोसा आप में, बस आप में विश्वास कर ,

पानी के स्पर्श बिना कोई भी नहाता नहीं |

कृति सक्सेना
प्राचार्या

राजभाषा समिति के कार्यों का विवेचन

राजभाषा, किसी राज्य या देश की घोषित भाषा होती है जो कि सभी राजकीय प्रयोजन अर्थात् सरकारी काम-काज में प्रयोग होती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अंतर्गत देवनागरी लिपि में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। साथ ही संविधान के अनुच्छेद 351 में संघ को यह कर्त्तव्य सौंपा गया है कि हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करें, जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

केंद्रीय विद्यालय एसएसबी श्रीनगर, केंद्रीय विद्यालय संगठन के मार्गदर्शन में सरकार की राजभाषा नीति के प्रावधानों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए सतत प्रयास कर रहा है। इस उद्देश्य हेतु विद्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया है। समिति ने विद्यालय में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अनेक कार्य किए जा रहे है। उन कार्यों को संक्षिप्त विवरण तथा कुछ छायाचित्र यहाँ प्रस्तुत किए जा रहें हैं जिससे कि अन्य हितधारक भी समिति के कार्यों से परिचित हो सकें।

प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यशालाएं और संगोष्ठियां / बैठकें आयोजित की जाती है ताकि शैक्षिक तथा गैर-शैक्षिक कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति रूचि पैदा की जा सके, हिंदी का प्रयोग करने में आ रही कठिनाईयों का निवारण किया जा सके। राजभाषा विभाग तथा केंद्रीय विद्यालय संगठन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार प्रत्येक वर्ष हिन्दी पखवाड़ा उमंग और उल्लास से मनाया जाता है।

1. विद्यालय के सभी आधिकारिक पत्र, नोटिस, आदेश, प्रमाणपत्र, रिपोर्ट आदि द्विभाषी रूप से लिखें जाते है।
2. विद्यालय के सभी बोर्ड, नामपत्र, दिशानिर्देश, आदि हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लगाए गए हैं।
3. विद्यालय के पुस्तकालय में हिंदी की पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचारपत्रों का पर्याप्त संग्रह है तथा अन्य पुस्तकें खरीदने की प्रक्रिया जारी है।
4. विद्यालय के छात्रों को हिंदी में लेखन, भाषण, निबंध, कविता, गीत, नाटक, चुटकुले, पहेली, शब्द-विचार, अनुवाद आदि के प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है । हिंदी हमारी अपनी भाषा है, हमारी मातृभाषा है और अपनी भाषा का प्रयोग करने में हमें किसी प्रकार की शर्म या संकोच नहीं कराना चाहिए। हमारा यह विद्यालय 'क' क्षेत्र के अंतर्गत आता है। हमारा यह दायित्व बनता है कि हम अधिक से अधिक हिंदी भाषा का प्रयोग करें तथा उसके संवर्धन में अपना योगदान दें। विद्यालय द्वारा तैयार की जा रही यह पत्रिका 'वागीशा' इसके लिए छोटा का प्रयास है।

राहुल कुमार

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)

"हिंदी देश की आत्मा है।"

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है।

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है।

देश में तकनीकी और आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ अंग्रेजी पूरे देश पर हावी होती जा रही है। हिन्दी देश की राजभाषा होने के बावजूद आज हर जगह अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है। हिन्दी जानते हुए भी लोग हिन्दी में बोलने, पढ़ने या काम करने में हिचकने लगे हैं। इसलिए सरकार का प्रयास है कि हिन्दी के प्रचलन के लिए उचित माहौल तैयार किया जा सके। राजभाषा हिंदी के विकास के लिए खासतौर से राजभाषा विभाग का गठन किया गया है।

भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयासरत है कि केंद्र सरकार के अधीन कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो। इसी कड़ी में राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। 14 सितंबर, 1949 का दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसी दिन संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस निर्णय को महत्व देने के लिए और हिन्दी के उपयोग को प्रचलित करने के लिए साल 1953 के उपरांत हर साल 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है। इसलिए इसको एक-दूसरे में प्रचारित करना चाहिये।

हिंदी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी।

प्रिया राणा
कनिष्ठ सचिवालय सहायक

शिक्षक

ज्ञान का दीपक वो जलाते हैं,
माता पिता के बाद वो आते हैं।
माता देती हैं हमको जीवन,
पिता करते हैं हमारी सुरक्षा,
लेकिन जो जीवन को सजाते हैं,

वही हमारे शिक्षक कहलाते है।।
शिक्षक बिना न ज्ञान है,
शिक्षक बिना न मान है,
हमारा जीवन सफल बनाते हैं,
ज्ञान का दीपक वो जलाते हैं।।

जीवन संघर्षो से लड़ना शिक्षक हमे बताते हैं।
सत्य न्याय के पथ पे चलना शिक्षक हमे बताते हैं
ज्ञान का दीपक वो जलाते हैं,
माता पिता के बाद वो आते हैं ।

विकास कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (गणित)

कार्य-शिक्षा

कार्य-अनुभव को कार्य-शिक्षा का नाम दिया गया है । यह शिक्षा का एक मूलभूत हिस्सा है। कार्य- शिक्षा ज्ञान की वह प्रकृति है, जिसमें शैक्षिक गतिविधियों में अनुभव ,समझ ,व्यावहारिक कौशलों को शामिल करने पर जोर दिया जाता है । कार्य-शिक्षा को उद्देश्य पूर्ण और सार्थक शारीरिक श्रम माना गया है, जिसमें करके सीखने के सिद्धांत को महत्व दिया गया है । जिससे विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार कार्यों को करते हैं । इससे छात्रों में आत्म-संतुष्टि के साथ-साथ सामाजिक गुणों का विकास होता है । यह हाथ और मस्तिष्क में समन्वय स्थापित करता है । रविंद्रनाथ टैगोर जी के अनुसार संस्कृत पुनः जागृति के लिए शिक्षा से शारीरिक श्रम को अलग नहीं किया जा सकता । प्रत्येक छात्र को अपने समुदाय विशेष के क्षेत्र से बाहर आकर मानव सेवा के कार्यों में सहभागिता करनी चाहिए। कार्यों को शिक्षा के माध्यम के रूप में लिया जाना चाहिए क्योंकि अनुभव हमारे ज्ञान को बढ़ाता है। महात्मा गांधी की नई तालीम शिक्षा में भी कौशलगत विकास पर बल दिया है। कार्य शिक्षा विद्यार्थियों में प्रयोगात्मक शिक्षा को बढ़ावा देती है, जिसके अंतर्गत बच्चे स्वयं कार्य को करके उसका अनुभव करते हैं एवं उसे कार्य के प्रति अपने ज्ञान व कौशल को विकसित करते हैं । 16 जुलाई 2015 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा आरंभ की गई प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना में भी युवा वर्ग को संगठित करके उनके कौशल को निखार कर योग्यता अनुसार रोजगार देना है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार वर्ष 2025 तक स्कूल और उच्चतर शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कम से कम 50% विद्यार्थियों को राष्ट्रीय कौशल विकास के लिए व्यवसायिक शिक्षा का अनुभव प्रदान किया जाएगा । स्कूलों में हब और स्पोक मॉडल में कौशल प्रयोगशालाएं विस्थापित और सृजित की जाएगी ।

अतः कार्य शिक्षा शारीरिक कार्य और श्रम के महत्व के प्रति गर्व की समझ और भावना विकसित करता है । यह सामाजिक रूप से मानव मूल्य जैसे समय की पाबंदी नियंत्रित तथा स्वच्छता सहकारिता एवं आत्मनिर्भरता को विकसित करने में मदद करता है ।

रुपांजली
कार्यानुभव शिक्षिका

विद्यार्थियों के लिए सफलता के मंत्र

वैश्वीकरण के इस दौर में दुनिया तेजी से आगे बढ़ रही है। आगे निकलने की अंधी प्रतिस्पर्धा में जनसाधारण हो या स्कूल का विद्यार्थी, शॉर्टकट अपनाकर सफलता के शीर्ष पर पहुंचना चाहता है। जबकि सफलता प्राप्ति के यही तो दो सबसे बड़े अवरोधक हैं। पहला- शॉर्टकट खोजना और दूसरा- तुरंत फल पाने की लालसा। विद्यार्थी को जीवन में किसी न किसी मोड़ पर असफलता का सामना करना ही पड़ता है। तब जरूरत होती है अपने भीतर एक किलर इंस्टिंक्ट पैदा करने की। वह किलर इंस्टिंक्ट, जो सोलह साल के सचिन तेंदुलकर ने अपने पहले टेस्ट मैच में वकार यूनुस के बाउंसर से लहूलुहान होने के बाद भी बरकरार रखी और क्रीज पर डटे रहे। अगर उस समय सचिन बाउंसर से डरकर मैदान छोड़ देते तो आज विश्व के महानतम बल्लेबाजों में उनकी गिनती न होती। सफलता की इबारत लिखने वाले व्यक्ति दीर्घकालिक चिंतक होते हैं। वह जीवन में आने वाली हरेक चुनौती को सहर्ष स्वीकार करते हैं। उदाहरण के तौर पर माउंट एवरेस्ट को फतह करने वाली पहली विकलांग महिला अरुणिमा सिन्हा। एक ट्रेन दुर्घटना में पैर कटने के बावजूद अरुणिमा ने जिंदगी से हार नहीं मानी। अपने भीतर दृढ़ इच्छाशक्ति जाग्रत करते हुए विश्व के सर्वोच्च शिखर पर चढ़कर विश्व-कीर्तिमान स्थापित किया। किंतु जो विद्यार्थी, जीवन-यात्रा में आने वाले उतार-चढ़ावों को अपनी नियति व भाग्य समझ लेते हैं, उनके लिए कोई भी एग्जाम या कॉम्पिटिशन ही नहीं बल्कि जिंदगी की हरेक चुनौती एक फोबिया बन जाती है।संचार-क्रांति के युग में विद्यार्थियों को हर चीज आसानी से मिल जाती है। संचार माध्यमों की बेतहाशा वृद्धि और सोशल मीडिया के आभासी संसार ने एकाग्रता भंग करने में विशेष भूमिका अदा की है। सोशल मीडिया की लत ने विद्यार्थियों के टाइम मैनेजमेंट को बुरी तरह प्रभावित किया है। टाइम मैनेजमेंट का अव्यवस्थित होना एग्जाम फोबिया का सबसे बड़ा कारण है। हम सबके पास एक दिन में जो 24 घंटे होते हैं, इन्हें हम किस प्रकार उपयोगी व सार्थक बनाकर सफलता प्राप्त कर सकते हैं, यह हमारे समय-प्रबंधन पर निर्भर करता है। समय-प्रबंधन के साथ-साथ समय की गुणवत्ता का ध्यान रखना बेहद जरूरी है। गेटे ने कहा है, 'सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य को सबसे महत्वहीन चीजों की दया पर कभी नहीं छोड़ना चाहिए'। अक्सर हम इस बात को नजरअंदाज कर देते हैं कि समय की मात्रा और गुणवत्ता में कोई सीधा संबंध नहीं होता। किंतु समय की मात्रा की बजाय उसकी गुणवत्ता ज्यादा महत्वपूर्ण है। अत: विद्यार्थी हो या आम आदमी, सभी के लिए जरूरी है कि वह अपनी प्राथमिकताओं का ध्यान रखते हुए यह आत्मविश्लेषण करे कि वह समय का सबसे गुणवत्तायुक्त उपयोग क्या कर सकता है। यही सफलता का मूलमंत्र है|

विजय प्रकाश
प्राथमिक शिक्षक

सीख

रुख अपना बदलना सीख।
हवा के साथ चलना सीख।।

देख बदल रही है दुनिया।
तू भी अब बदलना सीख।।

मिट जाएगा ये अँधेरा भी।
दिए की तरह जलना सीख।।

सुकूँ बहुत मिलेगा दिल को।
जख्मों पे मरहम मलना सीख।।

ये वक्त भी बदल जायेगा।
वक्त के साथ ढलना सीख।।

होगी फतेह हर श्रृंग एक दिन।
गिरकर तू सँभलना सीख।।

जगत बड़थ्वाल
प्राइमरी शिक्षक

मेरा घर

मेरे घर की खिड़की,
उत्तर दिशा में खुलती है।

खिड़की छोटी है पर,
यहाँ से बहुत कुछ दिखता है।
गंगोत्री ,यमुनोत्री, चौखंबा, केदारनाथ, कामेट।

चार धाम यात्रा तो कुछ महीनों की होती है
पर मैं, मेरे परिवार, मेरा गांव,
हर दिन चार धाम यात्रा करते हैं।

भोर चिड़ियों का कलरव
हर दिन एक नया गीत संगीत सुनता है
भौंरे, तितलियां, रंग-बिरंगी चिड़ियां
बैलों की घंटियां, हलयारों की आवाजें
प्रतिदिन आती है।
बांज, बुरांश, अयार, काफल, देवदार का जंगल
हिरण बघेरे की आवाजें,
बंदरों और लंगूरों का हर दिन का सर्कस
हे! परमपिता अनुगृहीत हूँ, इस जीवन में
अगले जीवन में भी ऐसे ही पहाड़ देना।

सुनीता रावत
प्राइमरी शिक्षिका

कविता – हूँ मैं अलग, हूँ मैं सही

मैं जैसी हूँ, अलग हूँ,
सपनों की रानी, स्वतंत्रता की राही।
मेरी सोच है आज़ाद,
मन में सरहदें पार कर,
करती हूँ मनमुताबिक खुद को सार्थक।

नहीं मैं बंधनों की बाधा,
जुबान पर स्वतंत्र, मन में सन्तुलित,
स्वतंत्र मेरे ख्याल, सपनों का परिचाल।

मेरी पहुंच है असीम,
सोचों के परे, सपनों का महकता परिंदा,
करती हूँ मुक्ति के साथ प्रकृति से व्यंग्य।

मेरे अल्पस्वर, सुनो रोमांचक कथा,
मन में बसे हर भाषा, संस्कृति की सहायता।

नहीं हूँ मैं सीमित, नहीं बेसीमित,
सोचों की उड़ान, सपनों की उम्मीद,

मेरे मंदिर में प्रकृति की महक है विराजित।

मेरी प्रेरणा है मुक्ति,
स्वतंत्रता की पुकार, सपनों की आवाज,
मैं हूँ अलग, मैं हूँ स्वतंत्र,
मेरा नाम है सपनों का परिचायक।"

श्रेया नेगी
प्राथमिक शिक्षिका

मेरी भाषा मेरी पहचान

भाषा एक मेल है और दोस्ती का पैगाम ,
इंसान ने खुद को कुछ अलग बनाया है,
खुद की संस्कृति और खुद की भाषा को बनाया है |

श्रेणी तो जानवर की थी, पर दिमाग पे जोर लगाया है,
और खुद को इंसान की श्रेणी में पाया है |
भाषा ही संस्कृति है और भाषा ही पहचान,
भाषा ही संगम है और विचारों का आदान प्रदान |
बिन भाषा के है हम जानवर और है बेजान |
भाषा के निर्माता को मेरा ह्रदय से प्रणाम
ह्रदय से प्रणाम |

श्री संजय पन्त
स्नातकोत्तर (कम्प्यूटर विज्ञान)

कोशिश कर हल निकलेगा

कोशिश कर, हल निकलेगा |
आज नहीं तो, कल निकलेगा |
अर्जुन के तीर सा सध ,
मरुस्थल से भी जल निकलेगा ||
मेहनत कर , पौधों को पानी दे ,

बंजर ज़मीन से भी फल निकलेगा |
ताकत जुटा ,   हिम्मत को आग दे ,
फौलाद का भी बल निकलेगा ||
जिन्दा रख ,   दिल मे उम्मीदों को ,
गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा |
कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की ,
जो है आज थमा सा ,चल निकलेगा ,
कोशिश कर हल निकलेगा||

श्री देवपवन नेगी
स्नातकोत्तर (गणित)

जीवन में खेलों का महत्त्व

"मैंने वाटरलू के युद्ध में जो सफलता प्राप्त की उसका प्रशिक्षण ईटन के मैदान में मिला"

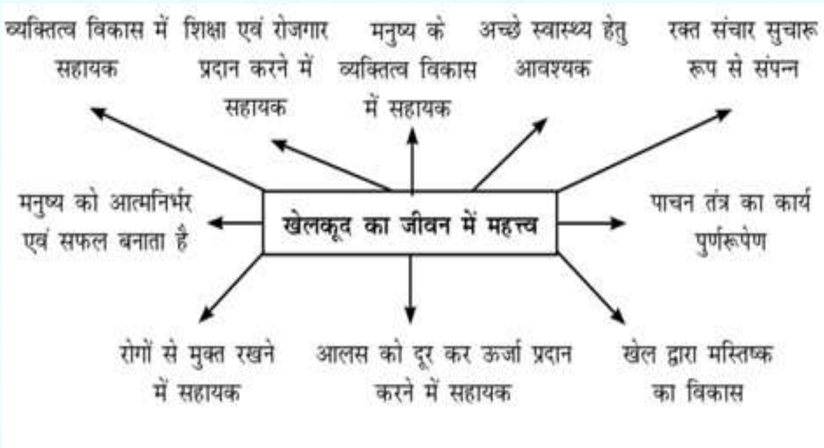

नेपोलियन को पराजित करने वाले एडवर्ड नेल्सन की यह पंक्ति खेल के महत्त्व को बयां करने के लिये पर्याप्त है। खेल न केवल हमें स्वस्थ रहने में योगदान देकर सक्षम बनाते हैं वरन् वर्तमान युग की संकीर्णतावादी सोच के विरुद्ध हमें निष्पक्ष, सहिष्णु तथा विनम्र बनाकर एक बेहतर मानव संसाधन के रूप में बदलते हैं। खेलों की महत्ता को दुनिया के प्रत्येक समाज व सभ्यता में स्वीकृति मिली है। रामायण, महाभारत से लेकर ग्रीको-रोमन दंत-कथाओं में होने वाले खेलों का जिक्र इस बात का प्रमाण है। पुनः ओलंपिक की प्रारंभिक शुरुआत यह स्पष्ट करती है कि खेलों को संस्थानिक महत्त्व मिलता रहा है।

वर्तमान परिवेश व जीवनशैली में आज मनुष्य जब अनेक रोगों से ग्रस्त हो रहा है। ऐसे समय में खेलों का महत्त्व स्वयमेव स्पष्ट हो जाता है। खेलों द्वारा न केवल हमारी दिनचर्या नियमित रहती है बल्कि ये उच्च रक्तचाप, ब्लड शुगर, मोटापा, हृदय रोग जैसी बीमारियों की संभावनाओं को भी न्यून करते हैं। इसके अलावा खेल द्वारा हमें स्वयं को चुस्त-दुरुस्त रखने में भी मदद मिलती है, जिससे हम अपने दायित्वों का निर्वहन सक्रियतापूर्वक कर पाते हैं।

एक अच्छा जीवन जीने हेतु अच्छे स्वास्थ्य का होना बहुत जरूरी है। जिस प्रकार शरीर को अच्छा और स्वस्थ रखने के लिये व्यायाम की आवश्यकता होती है । उसी प्रकार खेलकूद का भी स्वस्थ जीवन हेतु अत्यधिक महत्त्व है। खेल बच्चों और युवाओं के मानसिक तथा शारीरिक विकास दोनों ही के लिये अति आवश्यक है। नई पीढ़ी को किताबी ज्ञान के साथ-साथ खेलों में भी रुचि बढ़ाने की जरूरत है। परंपरगत रूप से भारत के मध्यम वर्ग की धारणा रोजगारपरकता के लिहाज से खेलों के प्रति नकारात्मक रही है। खेलकूद को मनुष्य के बौद्धिक विकास व रोजगार प्राप्ति में बाधक मानते हुए कहा जाता था कि "पढ़ोगे-लिखोगे तो बनोगे नवाब, खेलोगे-कूदोगे तो होगे खराब।" परंतु बदलते समय के साथ यह साबित हो गया कि खेल मनुष्य के विकास में बाधक नहीं वरन् सहायक हैं। बगैर शैक्षणिक उपलब्धि के भी सचिन तेंदुलकर द्वारा अर्जित यश, सम्मान, धन लोकप्रियता आदि इस बात के सुंदर उदाहरण हैं। सचिन तेंदुलकर द्वारा देश का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' प्राप्त करना, वर्तमान परिदृश्य में खेलों की महत्ता को दर्शाता है। आज सचिन ही नहीं वरन् सुशील कुमार, सानिया मिर्जा, अभिनव बिन्द्रा, साइना नेहवाल, मैरी कॉम व महेंद्र सिंह धोनी जैसे नामों ने सफलता व समृद्धि एवं श के जो आयाम गढ़े हैं, उसके समक्ष संस्थागत शिक्षा का प्रश्न गौण हो जाता है।

सरकार खेल में ख्याति प्राप्त खिलाड़ियों को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित करती है, अर्जुन एवं द्रोणाचार्य जैसे पुरस्कार इसी श्रेणी के खेल रत्न पुरस्कार है जो भारत में खेलों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु सरकार द्वारा खिलाड़ियों और गुरुओं को प्रदान किये जाते हैं। हमारे देश की कई महिलाओं यथा- पी.टी. उषा, मेरी कॉम, सायना नेहवाल एवं सानिया मिर्जा ने दुनिया भर में खेल में काफी नाम कमाया है और देश को गौरवान्वित किया है। खेलों को भारतीय संस्कृति एवं एकता का प्रतीक भी माना जाता है। खेल हमारी प्रगति को सुनिश्चित कर जीवन में सफलता प्रदान करते हैं।

आज सरकारी व निजी दोनों क्षेत्रों में खिलाड़ियों के लिये नौकरियाँ पाने के कई अवसर है। रेलवे, एअर इंडिया, भारत पेट्रोलियम, ओ.एन.जी.सी., आई-ओ-सी- जैसी सरकारी संस्थाओं के साथ-साथ टाटा अकादमी, जिंदल ग्रुप जैसे निजी समूह भी खेलों व खिलाड़ियों के विकास व प्रोत्साहन हेतु प्रतिबद्ध है। इसके अलावा आई.पी.एल., आई.बी.एल., एच.सी.एल., जैसी लीगों तथा स्थानीय क्लबों के स्तर पर भारी निवेश ने खिलाड़ियों के विकल्प को बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें बेहतर मंच व अवसर उपलब्ध कराया है। इसे देखते हुए अब कहा जा सकता है कि खेलोगे-“कूदोगे तो होगे नवाब।”

इससे यह स्पष्ट होता है कि खेल से न सिर्फ स्वास्थ्य बल्कि रोजगार एवं यश तथा सम्मान भी प्राप्त होता है। खेल द्वारा राजनैतिक लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है। कई देशों में यह देखने में आया है कि खेलों का अप्रत्यक्ष रूप से संबंध देश के विकास से भी होता है। वर्तमान समय में लोगों के खेलों के प्रति नजरिये में काफी बदलाव आया है। खेल हमें विभिन्न प्रकार से शिक्षित भी करते हैं। इससे मानवीय मूल्यों का विकास होता है साथ ही खेलों द्वारा सामूहिक चेतना का भी विकास होता है क्योंकि खेल की मूल भावना यही होती है कि अकेले नहीं बल्कि समूह में खेलना, खेल द्वारा नेतृत्व करने की कला का भी विकास होता है। खेल से रचनात्मकता को भी बढ़ावा मिलता है। आजकल खेलों में कई नई प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जा रहा है जिससे खेलों में सटीकता और उसके अनुसार नीति-निर्माण में भी सहायता मिल रही है।

खेलों के संदर्भ में अगर नकारात्मक पहलू की बात की जाए तो वह यह है कि मनोरंजन के नए साधनों और कॅरियर की भाग-दौड़ ने खेल के मैदानों में होने वाली भाग-दौड़ को कम कर दिया है। बच्चे हों या युवा, लगातार मोबाइल पर गेम या वीडियो गेम खेलना आज लोगों की आदत बनती जा रही है। इसके परिणामस्वरूप युवा और छात्र आबादी का एक बड़ा हिस्सा खेल के मैदानों से गायब रहता है। इस प्रकार तमाम वजहों से खेल अपनी उच्च भावना और उद्देश्यों के साथ लोगों के बीच पहुँच ही नहीं पा रहे हैं। वहीं वर्तमान युग के नए खेल व मनोरंजन के तरीके अपनी प्रकृति के अनुरूप लोगों में एकाकीपन तथा मानसिक विकृतियों को जन्म दे रहे हैं। उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि जीवन में खेलों का महत्त्व निर्विवाद है। ये न केवल जीवन में गति व लय का संचार करते हैं, वरन् हमें जीवन का महत्त्वपूर्ण पाठ भी पढ़ाते हैं।

श्री जितेन्द्र कुमार त्यागी
प्र०स्ना०शि० (शा०एवं स्वा०शि०)

मात-पिता तुम बिन.........

जाने क्यों ? अब ये त्योहार रास आते नहीं क्यों है ?
पिता के साए, माँ के आँचल के बिना
सब कुछ फ़ीका सा लगता क्यों है?
होती तो भीड़ बहुत हैं शहर में ...
बस कोई अपना सा लगता नहीं क्यों है ?
कुछ यूँ उलझ गए है जिंदगी के ताने-बाने में
लाख छुड़ाऊं दामन गाँठे सुलझती नहीं क्यों हैं?
दिन तो निकल जाता हैं उधेड़बुन में कशमकश में,
पर ये शाम ढलते-ढलते इतनी चुभती सी क्यों है?
कोई बतला दे, दिखा दे रास्ता
खो न जाऊँ कहीं, ये अजीब डर लगता सा क्यों हैं ?

प्रीति कुमारी
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिन्दी)

देवभूमि उत्तराखण्ड

यह उत्तराखण्ड हमारा है,
जहाँ बहती गंगा,यमुना जी की अविरल धारा है।
यह देवभूमि कहलाती है,
जहाँ सभी देवी-देवता वासी है।
यह प्राचीन ग्रंथो में वर्णित है
यह आज का नव निर्मित नही है।
पूर्व में इसने उत्तराँचल नाम पाया
फिर जनसम्मान के कारण उत्तराखण्ड कहलाया।

श्रुति जोशी
कम्प्यूटर प्रशिक्षक

देश के प्रति नागरिकों का कर्तव्य

देश के किसी भी व्यक्ति के कर्तव्यों का आशय उसके/उसकी सभी आयु वर्ग के लिये उन जिम्मेदारियों से हैं जो वो अपने देश के प्रति रखते हैं। देश के लिये अपनी जिम्मेदारियों को निभाने की याद दिलाने के लिये कोई विशेष समय नहीं होता, हांलाकि ये प्रत्येक भारतीय नागरिक का जन्मसिद्ध अधिकार हैं कि वो देश के प्रति अपने कर्तव्यों को समझे और आवश्यकता के अनुसार उनका निर्वाह या निष्पादन अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल करें।

नागरिक के रूप में:-

देश की वृद्धि एवं विकास के लिये सभी व्यक्ति व्यक्तिगत रुप से जिम्मेदार हैं।सभी को अपने मौलिक कर्तव्यों के बारे में जानकारी रखनी चाहिए और उनका पालन करना चाहिए। एक सच्चा एवं जिम्मेदार नागरिक पूर्ण निष्ठा से अपने सभी कर्तव्यों को निभाता है । जैसे कि, भारतीय नागरिकों को अपना राजनीतिक नेता चुनने के अधिकार हैं तो उन्हें अपने राजनीतिक नेता को वोट देते समय अपनी आँखे खुली रखनी चाहिए और एक ऐसा नेता चुनना चाहिए जो वास्तव में भ्रष्ट मानसिकता से मुक्त हो और देश का नेतृत्व करने में सक्षम हो।

देश के सभी नागरिकों को एक देश के कल्याण के लिये बनायी गयी सामाजिक व आर्थिक नीतियों का भी सम्मान करना चाहिए । लोगों को सरकार के बनाए हुए सभी नियमों और कानूनों का पालन करना चाहिए । उन्हें प्राधिकरणों का आदर करना चाहिए और कोई नियम नहीं तोड़ना चाहिए ।साथ ही साथ दूसरों को भी ऐसा करने के लिये प्रेरित करना चाहिए । उन्हें अपने खिलाफ किसी भी अपराध को सहन नहीं करना चाहिए और भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए ।

निष्कर्ष

भारत को दुनिया में सबसे अच्छा देश बनाने के लिए भारत के नागरिकों के लिए आवश्यक है कि वो वास्तविक अर्थों में आत्मनिर्भर हो एवं अपने देश के लिए अपने कर्तव्यों का व्यक्तिगत रुप से पालन करें। ये देश के विकास के लिये बहुत आवश्यक हैं जो तभी संभव हो सकता है जब देश में अनुशासित, समय के पाबंद, कर्तव्यपरायण और ईमानदार नागरिक हो ।

सुश्री पूनम कुमारी
प्राथमिक शिक्षिका

<u>हिंदी है हिंदुस्तान की जुबानी ।</u>

बनी आज क्यों हिंदी बेगानी, कुछ तो हुई है हमसे नादानी।
ब्रिटिश राज जब देश में आया, भाषा का कुचक्र फैलाया
हिंदी थी भारत की शान ,जिस पर हम सबको अभिमान
क्यों बोल रहे उसी को है हिंद देश का युवा नौजवान
हुई है हमसे नादानी।

14 सितंबर यह आता जाता रहेगा हिंदी के स्थान की बातें
चलती रहेगी पखवाड़े भर,
शपथ और रस में यूं ही लेते रहेंगे ,
उत्कर्ष की बात करते रहेंगे।
देश के गद्दारों को क्यों है इसमें गिलानी
हिंदी क्यों लगने लगी है इन्हें बेगानी
कुछ तो हुई है हमसे नादानी,

बोले सब हिंदी, सोचा सब हिंदी भारत माँ की यह माथे की बिंदी।
भाषाए चाहे कितनी भी अलग हो पर राष्ट्रभाषा सबसे अग्रिम हो।
शुद्ध परिष्कृत परमार्जित यह भाषा साहित्य प्रेम प्रेमियों की यह है आशा ।
अस्तु भारतवर्ष में हर युवा की इसकी पताका फहरानी है,
तो फिर सुधारो अपनी यह नादानी,
क्योंकि हिंदी है, हिंदुस्तान की जुबानी ।

अदिति थपलियाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका(अंग्रेजी)

अपनापन

सुबह उठकर गुड-मॉर्निंग से आती औपचारिकता की दुर्गन्ध।
नमस्ते करने में ही लगता मुझको अपनापन।।

मां के चरण स्पर्श करके खुश रहो सुनकर लगता मुझको अपनापन।।

माँ के पास जाकर जब पूछता हूँ कि कैसी हो आप?
जवाब में 'क्या चाहिए ?'सुनकर लगता मुझको अपनापन।

महंगे रेस्टोरेंट में खाना खाकर जमता ना दोस्ती का रंग।

यारो के संग तपरी पे चाय पीने में लगता मुझको अपनापन।

हर तनाव को दूर करता जब मिलता है अपनापन।
जो भी दिखे उदासी में,दिखाओ उसको अपनापन।।

वरुण शांडिल्य
(पुस्तकालयाध्यक्ष)

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्त्व

अनुशासन दो शब्दों से मिलकर बना है- अनु और शासन। अनु उपसर्ग है जो शासन से जुड़ा है और जिससे अनुशासन शब्द बना है। जिसका अर्थ है- किसी नियम के अधीन रहना या नियमों के शासन में रहना। हमारे जीवन के हर एक काम के लिए बेहतर अनुशासन की आवश्यकता होती है। यह एक कटु सच्चाई है कि अनुशासन के बिना सफलता नहीं हासिल की जा सकती। जिस देश के लोग अनुशासित हैं, जहाँ की सेना अनुशासित है, वह देश निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहेगा, वह सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ता रहेगा। पारिवारिक और सामाजिक जीवन में तो कहीं ज्यादा अनुशासन की आवश्यकता होती है।

अच्छे विद्यार्थी के गुणों में अनुशासन सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। अनुशासन का पालन करके ही एक अच्छा विद्यार्थी बना जा सकता है। अच्छे विद्यार्थी को माता पिता, शिक्षकों, बड़ों की आज्ञा हमेशा पालन करना चाहिए। जीवन को आनंदपूर्वक जीने के लिए विद्या और अनुशासन दोनों आवश्यक हैं। अनुशासन भी एक प्रकार की विद्या अपनी दिनचर्या, भजन चाल, रहन-सहन, सोच-विचार और अपने समस्त व्यवहार को व्यवस्थित करना ही अनुशासन है। अनुशासन का गुण बचपन में ही ग्रहण किया जाना चाहिए। अनुशासन जीवन के लिए परमावश्यक है तथा उसकी प्रथम पाठशाला है।

अनुशासन के लाभ क्या हैं?

अनुशासन हमें सही और सुखी जीवन जीने की कला को सिखाता है। अनुशासन के जरिए हमें अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में अहम किरदार निभाता है। इसके जरिए हम टाइम मैनेजमेंट, हेल्दी लाइफ स्टाइल आदि सीख सकते हैं। इसके साथ ही कुछ मुख्य अनुशासन के लाभ इस प्रकार हैं:-

अनुशासन हमारे व्यक्तित्व विकास में सहायक होता है।

इससे हम तनाव मुक्त रहते हैं। इससे हमें समय के महत्व का पता चलता है जिससे हम अपने समय को सही तरीके से इस्तेमाल कर सकते हैं । अनुशासन में रहने पर हम अपने साथ-साथ अपने समाज का भी विकास करते हैं। अनुशासन में रहने पर हमें खुशहाली की प्राप्ति होती है। यदि हम अनुशासन में रहते हैं तो हमें देखने वाले लोगों में भी अनुशासन अपनाने की इच्छा होती है।अनुशासन में रहने पर हमें शिक्षा की सही प्राप्ति होती है।

अनुशासन से हमें उज्जवल भविष्य की प्राप्ति होती है।

श्री रवि कुमार
(पीजीटी भौतिकी)

बूढी माँ

उसने तुम्हें आच्छादित किया
अपनी बाहों में ,
स्वर्गीय संगीत सुना
किस्से बयां किए धूप -छांव में ।
एक-एक कौर प्रेम से
खिलाती रही चांदनी रातों में,
लेकिन आज माँ मिलों दूर तन्हा है,
सितारे भी नहीं
आसमान- ए- शहर में ।

जब खांस- खांसकर बूढी माँ,
झुकी कमर और कांपते हाथों से
पानी का गिलास लेकर
दवाई अपनी खुद खाती होगी,
तब तुम्हे भूख- प्यास भी
कैसे लगती होगी ।

माँ नहीं जानती कंप्यूटर, इंटरनेट,
तुम इस दुनिया के बादशाह हो ।
वह दिल से मानती और दिल से सोचती है ,
तुम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस दुनिया की कठपुतली हो ।

माँ का दिल मोम ,तुम्हारा पत्थर है ,
मोम से पत्थर बनने का संकेत
क्या युग परिवर्तन का है ?

श्रीमती सावित्री रावत
प्राथमिक शिक्षिका

<u>सर्दी के रंग</u>

जैसे-जैसे पारा नीचे गिरता है,
मौसम रंग बदलने लगता है ।
क्या करे ये सर्दी जब आती,
सबको बड़ा सताती ।

गलियों में है धुंध का कहर,
चलने लगी अब शीत लहर ।
हर दिशा में छाया कोहरा,
धूप को खोजे हर एक चेहरा ।

लेकिन सूरज पे लगा,बादलों का पहरा ।
ठंड से कांपे देह बेचारी
टोपे, मोजे की कर ली तैयारी ।
ठंडी से खुद को बचाने

बैठे सब आग जलाने
सांसे लगी अब धुआ उड़ाने
चाय लगी हैं सबको भाने

गरम पकवान सब खाए
पानी के पास कोई ना जाए ।
काम से सब जी चुराए
सर्दी कुछ ऐसे सताए ।

श्रीमती प्रियंका असवाल
(नर्स)

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु विद्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ एवं प्राप्त उपलब्धियाँ

<u>हिन्दी-ओलंपियाड के विजेता</u>

उपलब्धियाँ

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड 2023

विद्यालय से 3 स्वर्ण तथा 1 रजत श्रेणी में विद्यालय स्तर पर छात्रों द्वारा स्थान प्राप्त किया गया है :-

1.अक्षत बडोनी ,कक्षा **IV** : स्वर्ण पदक

2.सुरक्षा यादव, कक्षा **V** : स्वर्ण पदक

3. ऑलविन भट्ट, कक्षा **IX** : स्वर्ण पदक

4. आइशा,कक्षा **I** : रजत पदक

श्री हरिवंश राय बच्चन

श्री मिथलेश (कला शिक्षक)

भाषा-संगम 2023-24

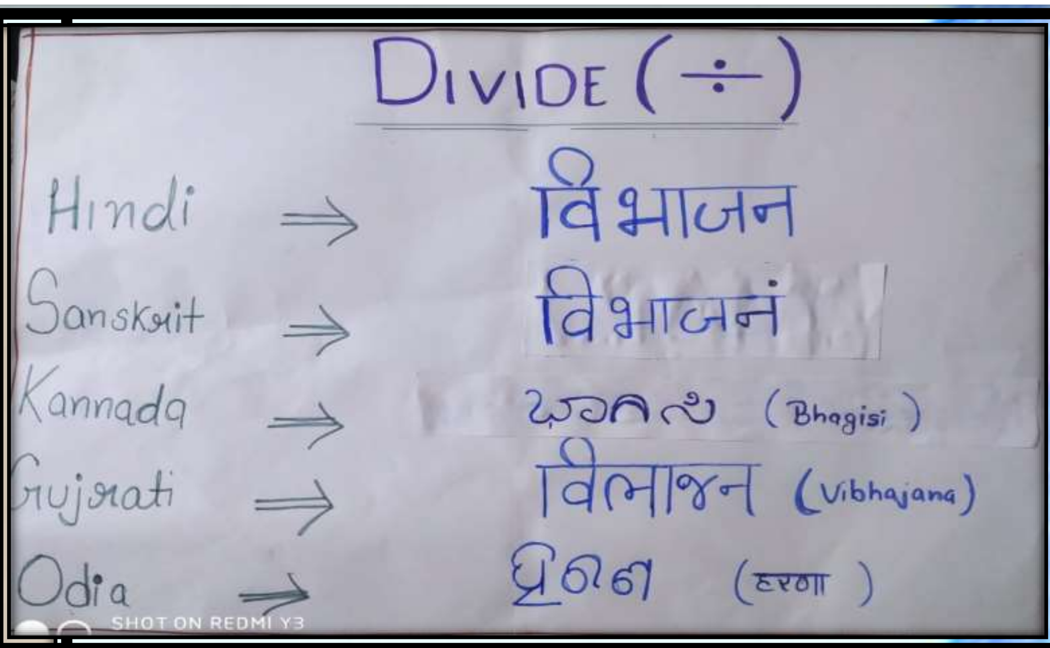

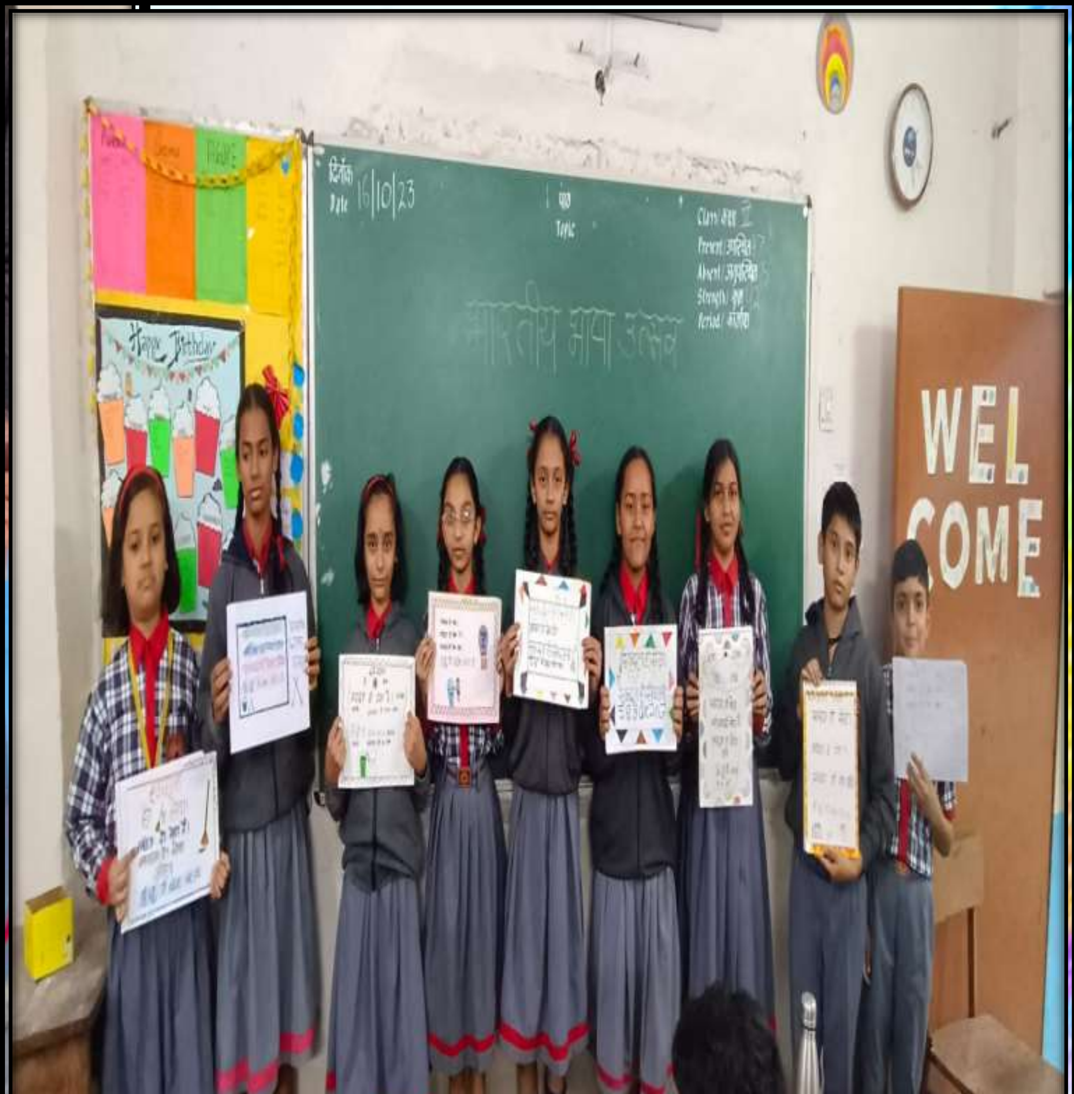

भाषा-संगम 2023-24

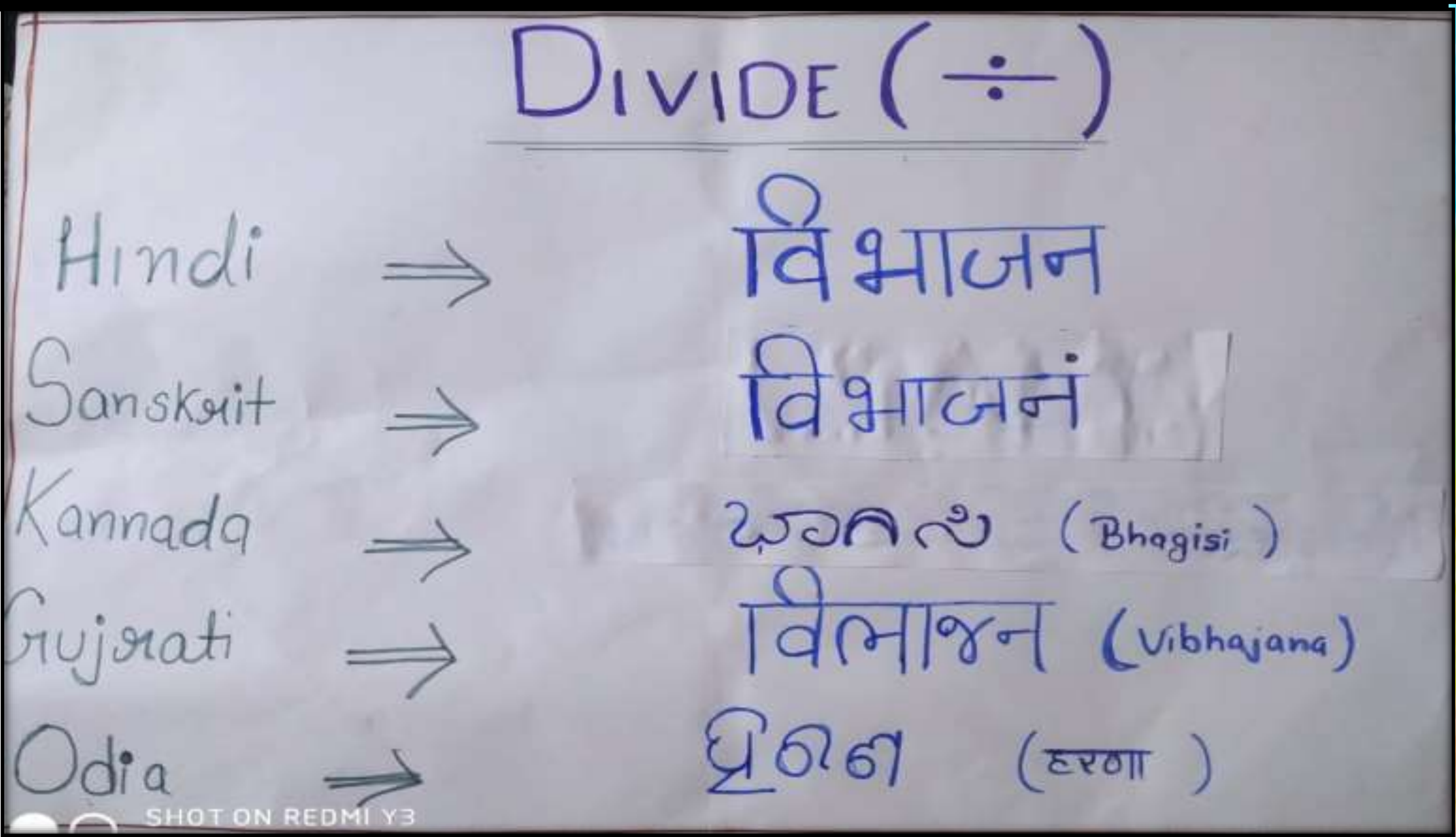

हिंदी-पखवाड़ा 2023-24

नाट्य-मंचन 2023-24

हिन्दी-पखवाड़ा 2023

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय सगठन

केन्द्रीय विद्यालय एस.एस.बी. श्रीनगर